वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी – 2017

महोत्सव मुबारक
2016

दानियों की लिस्ट

बलदेव सिंह जी के परिवार की ओर से	1,25000	श्री जगजीत सिंह जी	2000
चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर	20,000	श्री सुखदेव जी केसूपुर	1500
श्री डाक्टर जैरथ जी	10,000	श्री दूनीचन्द जी	1000
श्री देवकी नंदन जी	5000	श्री दिवान जी	1000
श्री चमन लाल जी	5000	श्री खेमचन्द जी	1000
श्री ओ. पी. वर्मा जी	5000	श्री के. एस. चौहान	500
श्री मदान साहिब	5000	श्री रशपाल सिंह जी	500
श्री सुभाष जी पंचकूला	4100	श्री सुखदेव जी गोनियाना	500
श्री प्रिंसीपल सरताज सिंह जी	4000	श्री रुप. सिंह जी संगरूर	500
श्री बी. पी. सागर	2100	श्री रतन सिंह जी चौहान	500
श्री डाक्टर नवजोत जी	2000	श्री चन्द्रगुप्त जी	500
श्री किशोरी लाल जी	2000	श्री डी. पी. मित्तल जी	500
श्री अशोक सिंगला	2000	फुटकल दान	12,200

भेंट फंड 2130 रु०, नीयत दान 28350 रु०, लंगर 10550 रु०
हित स्त्रोत 1000 एवं धर्म जीवन 3250 रु०

शोक समाचार

बहुत शोक कि देव समाज के आज के समय के सबसे पुराने, वरिष्ट कर्मचारी श्रीमान गिरवर प्रसाद जी का देहान्त 19 दिसम्बर 2016 की रात को हो गया। वह वर्षों से देव समाज भवन में रह रहे थे। उनकी सेवा का उचित प्रबन्ध होता रहा। श्रीमान निर्मल सिंह जी मन्त्री देव समाज ने आखरी शुभ कामना की। उनका दाह संस्कार 1 बजे दुपहिर किया गया। उनके पुत्र, पुत्रवधु ने सारे परिवार समेत आकर अपने बजुरग पिता को विदा किया। देव समाज से सम्बन्धित जन भी अच्छी संख्या में पहुंचे हुए थे। उनके सम्बन्ध में श्राद्ध की सभा 25 दिसम्बर 2016 को 12 बजे देव समाज भवन में रखी गई है। उनकी उमर 100 वर्ष के लगभग थी।

मन्त्री देव धर्म

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 1
जनवरी 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महोत्सव मुबारक 2016

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी संस्थापक देव समाज और देव धर्म का 166 वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव देव आश्रम, स्थित देवी नगर, निकट डेरा बस्सी (चण्डीगढ़) में पिछले वर्षों की तरह बड़े चाव भाव से 12 दिसम्बर 2016 से 15 दिसम्बर 2016 तक मनाया गया।

इस पावन पर्व को मनाने के लिए बहुत सारी तैयारियां की गई। कई लाख रु० खर्च करके सुखदेव सिंह जी (इंगलैंड) द्वारा महोत्सव के लिए डाईनिंग हाल की फालस सीलिंग करवाई। हाल में पलासटक पेंट करवाया, सुन्दर लाईटें लगवाई। सारे विशाल भवन की अन्दर बाहर से सफेद पेंट करवाया गया। सब कमरों में पेंट आदि करवाकर यात्रियों के लिए तैयार किया गया। विशेषकर मयूज़ियम बनाने के लिए प्रबन्ध किया गया। एटरैंस से लेकर हाल तक की सड़क की ज़रूरी मुरम्मत करवाई गई। बाहर का गेट उतारकर बहुत शानदार सुन्दर गेट लगवाया। श्रीमान जगदीष प्रसाद जी की सहायता से बहुत से बैनरज़, माटोज और फोटोज़ लगाए गई। हाल के भीतर सफेद चादरों से बहुत सुन्दर बिछाई की गई। टैंट हाऊस से कुर्सियों, मेजों, तख़्त पोछों, बैंड बाजा, लाऊड स्पीकर, फोटोज़ और Video का प्रबन्ध किया गया। सफाई आदि के लिए मजदूरों का प्रबन्ध किया गया। किताबों की बड़ी स्टाल लगाई गई।

यात्रियों की सुविधा के लिए चाय, दूध, की स्टाल का भी प्रबन्ध किया गया। साफ पानी के गैलन खरीदे गए। सजावटी रोशनी का भी प्रबन्ध किया। रजिन्द्र जी देहरादून में पहले आकर खुशी खुशी सारी सजावटी लाईटस लगाकर बहुत प्रसन्नता और अपना सौभाग्य अनुभव किया। सारा सेहन वा पेड़ पौधे जगमग जगमग कर दिए।

श्रीमान जगदीष जी ने बार बार चण्डीगढ़ से जाकर, बहुत भाग दौड़ करके सारा प्रबन्ध सम्भाला। श्री रमेश जी ने सारी तैयारियों में अपना अच्छा योगदान दिया। फूलों के गमलों और बनावटी फूलों से स्टेज को सजाया गया। बहुत सादगी और सुन्दरता हाल में झलकती थी।

गुरू महाराज की छवि के इर्द गिर्द रोशनी की लड़ी से सजावट की गई। बाहर से लेकर ऐंटरैंस

दिवार के आगे तक तकरीबन 200 फुट लम्बे कार मार्ग पर दोनों तरफ 8 – 9 फुट ऊंचे कतार में झण्डे लगाए गए, जिससे आंगन की शोभा और भी बढ़ गई। आश्रम का कोना कोना साफ सुथरा किया गया। गुरू महाराज का बड़ा विजय पताका आश्रम की चोटी पर लहरा रहा था। प्रवेश सभा से पहले आश्रम एक नई दुल्हन की तरह सज गया था।

महोत्सव के यात्रियों का आगमन का नज़ारा भी बड़ा सुन्दर था। चण्डीगढ़, पंचकूला के ईलावा अच्छी गिणती में यात्री पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, यू.पी., उत्तराखण्ड, हिमाचल आदि से नीचे लिखे स्थानों से 10 – 11 दिसम्बर से ही पधारने शुरू हो गए थे। सकूटरों और कारों का तांता लगा रहता था। इंगलैंड, जर्मनी वा अमरीका से भी यात्री पधारे। पंजाब से मुहाली, संगरूर, मौड़ां, भंटिडा, कल्याण, थराजवाला, गोनियाना, हरियाणा से अम्बाला, यमुनानगर, मल्लेका, केसूपुरा, ढाणी, पंचकूला, फरीदावाद, हिसार, गुड़गांव, करनाल।

राजस्थान से गंगानगर, पदमपुर, गज सिंह पुर,

हिमाचल – सोलन,

यू.पी. – सहारनपुर, रूड़की, मेरठ, देहरादून, लखनऊ, श्री अकबरपुर, मोदीपुरम, कुआंखेड़ा, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पधारे।

<u>12 – 12 – 2016, प्रवेश सभा, 4.30 बजे शाम।</u>

सभापति जी श्रीमान किशन सिंह जी चौहान।

दूसरा घंटा बजने पर हाल में यात्रीगण एकत्र हो गए और "हमारे पूजनीय सत्गुरू जी, तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" के अलाप से महोत्सव का सूत्रपात हुआ। परम पूजनीय भगवान का सुन्दर फूलों के हार द्वारा अर्चन किया गया। फिर देव स्तोत्र के गान ओर व्याख्या के बाद एक भजन का गान हुआ और उसके बाद सभापति जी ने भाव पूर्ण शब्दों से गुरू के दरबार में महोत्सव की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की।

फिर सभापति जी ने बताया कि हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हम पूजनीय भगवान देवात्मा के तुच्छ सेवक उनका लासानी जन्म महोत्सव मना रहे हैं। आज मानवता की बहुत कृपा पात्र अवस्था है। मनुष्य पशु जगत वा वनस्पति जगत पर अत्याचार कर रहा है। मनुष्य के परसार सम्बन्धों मे भी जो नर्क छाया हुआ है। माता – पिता – सन्तान का सम्बन्ध, पति पत्नी का सम्बन्ध, भाई बहन अर्थात सब सम्बन्धों में नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं ने अन्मेल, दुख और हानि बरपा की हुई है। इस संसार में यह कितना कुत्सित दृश्य है। उन्होंने बताया कि सुन्दर वस्तु सदा आनन्द दायक होती है। देवात्मा के देव रूप में सत्य, शुभ और सुन्दरता का समावेश है। भगवान देवात्मा मानव रिश्तों को सुन्दर और सुमेल पूर्ण बनाते हैं। सेवा के सुन्दर दृश्य सम्बन्धों में देखने को मिलते हैं। अपने देव प्रभावों से हानि परिशोध करवा कर हृदयों को शुद्ध करते हैं। गुरू महाराज के देव प्रभावों से श्रद्धेय कुमारी प्रेमदेवी जी गुरू मिशन के लिए निस्सार हो गई। सभापति जी ने कुछ फरिश्ता गुरू शिष्यों के उदगार पढ़कर सुनाए जो दिलों को प्रभावित करने वाले थे। श्रीमान भाई अमर सिंह जी, श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी के

सुन्दर भावों का श्रद्धा भाव से वर्णन किया। जिन्होंने कहा था, "दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ाया बेड़े।"

इनके ब्यान के बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस पावन अवसर से लाभ उठाने के लिए कुछ नियमों का ब्यान किया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि कोई ऐसा सरोवर नहीं जहां काले कौए सुफेद होते हों, परन्तु देव प्रभावों की गंगा में काले, मैले, पापी हृदय शुद्ध हो जाते हैं, उन्होंने कुछ जनों को खड़ा करके बताया कि जो देव प्रभावों द्वारा पवित्र बने हैं। फिर उन्होंने आने वाले सब यात्रियों का स्वागत किया और मुबारक बाद दी। ऐसा सुन्दर मण्डल पैदा हो रहा था कि उपस्थित जन धन्ध धन्य हो रहे थे। और अपने सौभाग्य को अनुभव कर रहे थे।

अगले दिनों की सूचनाएं और डियूटीयां पढ़कर सुनाई और सभा की समाप्ति की।

दिनांक 13 दिसम्बर 2016
पहली सभा, 9.30 बजे।

1) माननीय सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने सभा के विषय "परमपूजनीय भगवान देव आत्मा का परम आवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध" पर फरमाया कि पानी, हवा, भोजन आदि भौतिक वस्तुओं के बिना जीवन सम्भव नहीं है। इसलिए इनके साथ मनुष्य का जो सम्बन्ध है वह नाकारा नहीं जा सकता। इसी लिए मनुष्य को वनस्पति जगत, पशु और मनुष्य जगत के साथ सम्बन्धों के सत्य को जानना जरूरी है। सम्बन्धों के बिना किसी विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। भगवान देवात्मा ने बताया है कि यह सम्बन्ध हक़ीकत हैं, जो कुछ समाज ने दिया है वह हक़ीकत है चाहे वह फायदेमंद हो या नुकसान दायक। समाज में कुरीतियां, बुराईयां जैसे सति-प्रथा, दास प्रथा, छुआ छूत, जात-पात, आदि प्रचलित थी। राज राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्या सागर, लिंकन जैसे महा पुरषों ने इन की कुरीतीयों, प्रथाओं को समाज से दूर किया। उसके विपरीत मानव समाज ने मनुष्य को भाषा का ज्ञान दिया जो इसके बिना मुमकिन नहीं था। मानव समाज के बिना हमारा विकास नहीं हो सकता। सम्बन्धों के बिना मनुष्य का विकास सम्भव नहीं। अच्छी संगत में विकास और नीच संगत से मनुष्य का नाश होना जरूरी है।

2) सभापति जी ने आगे फरमाया कि अगर हमें यह सम्बन्ध तत्व समझ में आ जाय तो भगवान देवात्मा की शिक्षा का समझना आसान हो जाएगा। अच्छे लोगों की संगत करने से उच्च बोध पैदा होते हैं। भगवान देवात्मा ने जो उच्च भाव पैदा करने की देव समाज संगत बनाई हैं उसके साथ जुड़कर हम नये उच्च जीवन में विकास पाते हैं। सभापति जी ने कई उच्च हस्तियों जैसे, श्रद्धेय सरदार जमीयत सिंह जी, श्रद्धय श्रीमान ईश्वर जी, श्रीमान धर्मबल जी, सरदार सावन सिंह जी, श्रीमान जुज्ली राम जी, श्रीमान गुरवन्त सिंह जी, श्रीमान गोबिन्द राम जी, श्रीमान नौध सिंह जी के उच्च संगत में आने से भगवान देव आत्मा के प्रभाव पाकर उनमें जो जो उच्च परिवर्तन आए, उनका ब्यान किया। और इसके आगे, कुछ वर्तमान धर्म सम्बन्धी जैसे, श्रीमान

कृष्ण लाल जी पटवारी, श्रीमान डा० मुनशा सिंह जी के अन्दर उच्च परिवर्तन के बारे में बताया। इन सब के सुन्दर उच्च परिवर्तन को जानकर हमें पता लगता है कि भगवान देव आत्मा के साथ सम्बन्ध जीवन दायक है।

3) सभापति जी ने आगे फरमाया कि भगवान के इस जीवनदायक सम्बन्ध को महसूस करने के लिए हमारे अन्दर शुक्रगुजारी के भाव का होना जरूरी है जिसके बिना मनुष्य का भला नहीं हो सकता। बहुत कम मनुष्यों में यह भाव वर्तमान है "Gratitude is conspicious by its absence in the mankind" काश! हम शुक्रगुजार बन सकें और हमारा भला हो सके।

4) इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन के बारे में विस्तार से बताया कि वह कैसा नारकीय जीवन देवसमाज में आने से पहले जी रहे थे। वह खुद कहते हैं कि "मैं विनाश की रेल पर सवार था, यहां रौला, झगड़ा फसाद, accident लड़ाई, दंगा अंग हीनता, और अंत में विनाश के स्टेशन थे।" देव प्रभाव पाने के बाद इनका नारकीय जीवन स्वर्गीय जीवन में परिवर्तित हो गया और विकास की राह पर चल पड़े हैं।

5) श्रीमान जी ने आगे बताया कि भगवान देवात्मा का मृत्यु से रक्षा और जीवन प्रदान करने वाला सम्बन्ध परम आवश्यक सम्बन्ध है, यह सम्बन्ध सब सम्बन्धों से बढ़कर है। मेरा जीवन सबसे मुख्य वस्तु है। देवात्मा के साथ सम्बन्ध के बिना पता ही नहीं लगता कि जीवन क्या है, और वह नाश हो रहा है। पता लग भी जाए तो भी उसकी गहराई को समझना बहुत कठिन है। भगवान के साथ सम्बन्ध, मनुष्य को नाश से मुक्ति, मृत्यु से निकालने का और अमृतत्व तक जाने का, सम्बन्ध है।

<u>पब्लिक लैक्चर : 13 – 12 – 2016, 4 बजे।</u>

वक्ता : श्रीमान सुखदेव सिंह जी।

विषय : 21वीं सदी में भी देवात्मा अज्ञात क्यों हैं?

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि आज के वक्ता आज के समय के बहुत पवित्र, ईमानदार और भक्त पिता की सन्तान हैं।

विद्वान वक्ता ने दीनता पूर्वक कहा कि मैंने जो कुछ सीखा है, इस महान संगत से और देवात्मा की कृपा से। उन्होंने अपने विषय पर रोशनी डालते हुए बताया कि भगवान देवात्मा अपने समय पर, और आज भी मानवता के लिए अज्ञात हैं। मानवता कई कारणों से उन्हे समझ नहीं सकी, जिसमें एक कारण उनका मनोवैज्ञानिक पक्ष है। देवात्मा देव बोधों के स्वामी थे। मनुष्यात्मा सुखों के प्रेमी, बोधी और दास हैं। यह दो अलग अलग दुनियां है। हम अपनी इस अयोग्यता को बहाना बना लेते हैं। देवात्मा महान व्यक्ति नहीं थे बल्कि उनकी मनोवैज्ञानिक बनतर ही भिन्न थी। मनुष्यात्मा के अंग उसके भाव है, पर मनुष्य में विशेषकर सात्विक भावधारी मनुष्यों में भी सात्विक भावों की गिणती पूरी नहीं है। महान सात्विक जीवनधारियों

में भी एक, दो या तीन से अधिक सात्विक भाव नहीं पाए जाते। इसलिए उनके सात्विक भावों की गठन का ढांचा अधूरा वा भद्धा है। देवरूप की सुन्दरता कुछ और है और इससे भिन्न संगठन है। देव रूप केवल भिन्न ही नहीं, supreme सर्वोच्च संगठन है। शुभ अनुराग सात्विक भावों का Comprehensive होना है। यह शुभ अनुराग ही देवात्मा का 32 वर्ष की उमर में सत्य अनुराग के अधीन हो गया। यह मानव इतिहास की अद्वितीय घटना है।

मनुष्य के सात्विक भावों में टकराहट की सम्भावना सदा बनी रहती है, जो देव रूप में सम्भव नहीं। देवात्मा के शुभ भाव पूर्ण, परम सुन्दर मेल में हैं। मनुष्य का न्याय का सात्विक भाव, शुक्रगुज़ारी से प्रभावित होकर उपकारी की ओर झुक जाता है, पूर्ण न्याय नहीं कर सकता। सात्विक भावधारी आत्माओं में नीच अनुराग भी रह सकते हैं, मनुष्य की गठन का यही दोष शुभ अनुरागी में होना असम्भव है। क्योंकि शुभ अनुराग के साथ कोई नीच अनुराग नहीं रह सकता। देवात्मा की गठन सब नीच अनुरागों से पूर्ण पवित्र है।

हम किसी सात्विक जीवन की कठिनाईयों का अनुमान कर सकते हैं। ईमानदारी का भाव ईमानदार मनुष्य के कितने दुखों का कारण बन जाता है। उसको भ्रष्ट लोग नहीं जान सकते। घृणा करने और सताने पर उतारू हो जाते हैं। उसका जीना दूभर हो जाता है। शुभ अनुरागी देवात्मा कितने तड़पे और सताए गए, सुख अनुरागी उसका अनुमान ही नहीं कर सकते। उनके लिए उस गहराई को समझना असम्भव है। मनुष्य अपने सात्विक भावों में भी अंह की तृप्ति करने के लिए बेबस है। क्योंकि वह अंह अनुराग से पूर्णत: अबोधी है। फिर ऐसी गठनधारी मनुष्य पूर्ण पवित्र, अंह से पूर्ण मुक्त, निर्मल देवात्मा को कैसे जान सकते हैं?

मनुष्य की आत्मिक गठन ऐसी है कि वह देवात्मा के ethics को नहीं जान सकता। उसे कुछ मान्सिक ज्ञान पूजनीय देवशास्त्र भाग – 3 और भाग – 4 से मिल सकता है। देवात्मा के शुभ व्यवहार सात्विक भावों से ऊपर हित अनुराग से परिचालित हैं। देवरूप में सारे सात्विक भाव पूर्ण गहराई और पूर्ण गिणती में वर्तमान हैं। देवात्मा की धर्म शिक्षा हमारे सुख अनुरागों और बोधों के विरुद्ध है।

एक और प्रश्न यह है कि क्या ठीक है और क्या ग़ल्त है, सात्विक भावों की सीमित रोशनी होने के कारण कुछ अंश ही समझ हो सकती है।

देवात्मा ने आदर्श जीवन जीकर, उसकी आदर्श उदाहरण रखकर मानवता पर महान उपकार किया है, यह हम मनुष्य आत्माओं की खुराक है। देवात्मा की धर्म शिक्षा सब धर्मों की शिक्षा से आसान है, मुख्य रूप से आत्मा पर केंन्द्रित है, तीसरा उपकार यह है कि यह विज्ञानमूलक है।

देवात्मा की एक चनौती यह थी एक विशेष और बिल्कुल भिन्न श्रेणी के होने के कारण, उनके लिए जीना कठिन हो गया था। उन्होंने फरमाया है कि "मैं अज्ञात हूं, अनाद्रित हूं, सन्तप्त वा परित्यक्त हूं।"

देवात्मा के भीतर जो देव ज्योति वा देव तेज पैदा हुए, वह मानव इतिहास में एक वचित्र वा

अद्वितीय घटना है। वह पलपल तड़पते कैसे बच (survive) सके, यह भी आश्चर्य्य की बात है। देवात्मा क्यों तड़पते थे, क्योंकि वह नेचर के चारों जगतों से जीवित सम्बन्ध रखते थे। 1892 से 1929 तक देवात्मा चार बार मौत के मुंह के निकट पहुँच गए थे। उनको कायम (survive) रखना नेचर के लिए भी एक चनौती थी।

देवात्मा के एक सेवक जब उन्हें छोड़कर चले गए और उनके विरोधी बन गए, तो उन्होंने कहा मेरी वह सारी लिखतें वापिस कर दो जो आपके पास हैं, तो देवात्मा ने फरमाया कि वह लिखितें हमारी देव ज्योति में लिखी गई हैं, इसलिए यदि चाहो तो तुम अब और लिख सकते हो। यदि हम कोई लिट्रेचर लिखते हैं, तो वह हमारा नहीं। कई बार सुनते हैं कि देवात्मा का लहौर में भी बहुत से नागरिकों को पता नहीं था। यह हमारी आराम परस्ती का कसूर है।

माननिय वक्ता ने बताया कि अच्छा है कि हम देवात्मा के ज़हूर को जान सके हैं। यदि देवराज आ भी जाए, तो भी उन्हें पहचानने का गम फिर भी रहेगा। देवात्मा अपने देव प्रभावों के अधीन थे, हमें देव प्रभावों का साक्षात ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिए देवात्मा को पहचानने के लिए अभी बहुत समय और योग्यता दरकार है। इसके लिए नई संस्थाओं का विकास होगा। हम एक देवात्मा के science museum खोल रहे हैं, विकास क्रम में Training Centre खुलने आवश्यक हैं। उनकी शिक्षा के होने चाहिए। इनकी बहुत आवश्यकता है।

हमने जो कुछ उनसे पाया है, कुछ देना भी पड़ेगा, हमें यह विचार करना पड़ेगा कि हमने क्या लिया है और क्या दिया है। हमारा अंह सबसे बड़ा विघ्नकारी है। इसके लिए शर्म आती है। मैं कपटी न बनूं, यही कामना हैं कि भगवान देवात्मा अज्ञात न रहें

यह लैक्चर बहुत विद्वतापूर्ण और भावपूर्ण था।

नई पुस्तकें

भगवान देवात्मा फांऊडेशन की ओर से लाखों रुपया लगाकर नीचे लिखी 10 नई पुस्तकें बहुत सुन्दर जिल्द के आकार में छपकर तैय्यार हो गई हैं।

1) आद्वितीय त्याग 1 से 7 वें भाग तक
2) माता पूजनीय लीलावती जी का जीवन चरित्र
3) सिद्धांत दर्पण
4) आत्म परिचय

2 – 3 पुस्तकें और भी छपने के लिए प्रैस में हैं।

महोत्सव मुबारक का विशेष दिन

आज का दिन बहुत ही मुबारक था। आज परम पूजनीय भगवान देवाात्मा का शुभ जन्मदिन था। यात्रियों के अन्दर भी विशेष उतसाह और खुशी का वातावरण था। बहुत सारे यात्री सुबह उठकर नहा धोकर सुन्दर कपड़े पहनकर तैयार हो रहे थे। 6.30 बजे के बाद सेवक सेविका भजन गाने के लिए महोत्सव हाल के बाहर खुले शैड्ड के नीचे, जहां पुस्तकों की स्टाल एक तरफ लगी हुई थी। एकत्र होने लग गए थे। श्रीमान जगदीष जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने विशेष चाव वा उत्साह से पूजनीय भगवान की महिमा के गीत गाने शुरू कर दिए। सब यात्री हार ले लेकर भजन गाने में शामिल होने लगे। सामने एक बैंच रखी हुई थी, जिसके इर्द गिर्द धर्म सम्बन्धी ऊंचे स्वर में भजन गा रहे थे और गुरू की जय ध्वनि बुला रहे थे। 7 बजे के करीब श्रीमान बलदेव सिंह जी आकर शामिल हुए। सवा सात बजे से कुछ पहले ही सूरज की पहली किरण के समय घण्टा बजने लगा, भजनों को रोक कर सब धर्म सम्बन्धियों ने गुरू की जय ध्वनि की जोश से गर्जना की। उसी समय बैंड खुशी के तराने बजाने लगा। फिर "प्रगटे देव गुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" भजन खूब जोश से सब मिलकर गाने लगे। उसके उपरान्त श्रीमान बलदेव सिंह जी ने स्टेज पर खड़े होकर, आज के दिन की सबको मुबारक दी, उसके बाद पूजनीय भगवान के आर्विभाव, जीवन ब्रत और उनकी विरोधताओं और अन्त में पाप और मिथ्या पर उनकी फतह, और उनके द्वारा पापाचारी और मिथ्याचारी जीवनों में परिवर्तन को बताते हुए शुभ कामनाएं की कि ऐसे आर्विभाव की खुशख़बरी और कारज चारों ओर, देश देशान्तर में फैले। श्री अकबरपुर की पुण्य भूमि को अग्निहोत्री उच्च कुल को, भगवान के श्रद्धेय माता जी और पिता जी और पूर्वजों को बार बार नमन किया और धन्यवाद दिया। हाजरीन को बताया कि आज का दिन शुभ संकल्पों का दिन है, त्याग का दिन है, कुर्बानियां और दान देने का दिन है, इसे हम उच्च भेंटों और त्याग के द्वारा सफल कर सकें। फिर जय ध्वनि के साथ ही बैंड बाजा खुशी के सुर बजाने लगा। कितने ही धर्म सम्बन्धी खुशी से भरकर नृत्य करने लगे और बाकी जन कतार में जाकर गुरू महाराज की पवित्र छवि के आगे हार रखकर प्रणाम का साधन करने लगे।

विशेष दिन,14.12.2016, सुबह 9.00 बजे।

आज भगवान देवात्मा के जन्म दिन के उपलक्ष्य में विशेष तैयारियां की गई। सभा हाल बहुत ही सुन्दर तरीके से सजाया गया था, सारा सभा हाल खचाखच भरा हुआ था। चारों और उल्हास का वातावरण था। हर साथी सेवक अपनी अपनी ऐकाकारी पहन कर सभा हाल में उपस्थित थे। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव स्तोत्र का गान और व्याख्या कर सहाय प्रार्थना की। उसके बाद "अद्धितीय जीवन व्रतधारी अद्धितीय महिमा है तुम्हारी" भजन का गान किया गया। इसके पश्चात सभापति जी ने सभा के विषय "भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य,

उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी और से कुर्बानियों की आवश्यकता और धन जन की अपील" पर ब्यान किया कि "विश्व में जो कुछ है, यहां है, जैसा भी है, जिस किसी रूप में भी है, उसके समूह को नेचर कहते हैं। मोटे शब्दों में इस नेचर के अन्दर नियमों का राज है, उनकी समझ जब तक नहीं पैदा होती, तब तक भगवान देवात्मा और उनकी शिक्षा को नहीं समझा जा सकता। नेचर के चारों जगत – भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य जगतों में, नियम ही काम करते हैं। यह चारों जगत कुछ न कुछ भलाई का काम कर रहे हैं, उनका विकास हो रहा है। दूसरी तरफ इनमें विनाश का नियम भी काम कर रहा है। नेचर की सब वस्तुएं जड़ और शक्ति से मिल कर बनी हुई हैं। इसके विकास क्रम में सूर्य और सूर्य मंडल पैदा हुआ है। और इसके आगे पृथ्वी पर विकास क्रम में पानी और जीवजन्तु और मनुष्य पैदा हुए। आगे लगातार विकास क्रम में इन चारों जगतों में विकास होता गया और हो रहा है। इसी प्रकार मनुष्य में भी विकास और विनाश की क्रिया जारी है। इन क्रियाओं में जो मनुष्य विकास क्रम का साथ देता है वही बनता और विकास पाता है, और जो अस्तित्व विनाश का साथी बनता है या बन रहा है, उसका विनाश होना आवश्यक है। इन चारों जगतों में विकास की लड़ी चली आ रही है। सभापति जी ने आगे फरमाया कि इस विकास की क्रिया में मनुष्य में उच्च भावों का विकास हुआ है। लेकिन उसके साथ साथ उसका विनाश भी जारी है। उच्च भावों की शुरूआत माता का अपनी सन्तान के प्रति स्नेह, प्रेम के पैदा होने से शुरू हुआ है। यहां से पर का बोध वा पर का ख्याल का भाव पैदा हुआ और वहां से दूसरे अच्छे भावों का विकास शुरू हुआ, जिनसे मनुष्य ज्यादातर शून्य हैं। यह सात्विक भाव जैसे सन्मान श्रद्धा का भाव, स्नेह और दया का भाव, तीसरा कृतज्ञता का भाव और अपने में अच्छे भावों की कमी वा शून्यता की वास्तिवकता महसूस करने वा देखने के लायक होना। पर भाव ने मनुष्यों में परोपकारी पैदा किये जैसे कि डेनियल, मदर टैरिसा, लिंकन, भगत पूर्ण सिंह, ईश्वर चन्द्र, विद्यासागर आदि जिन्होंने मनुष्य जाति के भले के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया। लेकिन विशुद्ध परोपकारी दुनियां में बहुत कम हैं। सभापति जी ने फरमाया कि उसी विकास की क्रिया को आगे बढ़ाते हुऐ नेचर में भगवान देवात्मा का आर्विभाव हुआ। उनमें एक नई चीज, एक नया भाव पैदा कर दिया था, वह था उनमें सत्य और शुभ के प्रति पूर्ण अनुराग यहां नेचर ने ऐसी विकास की सुन्दर छलांग लगाई कि मनुष्य जाति में से एक ऐसे अकेले नये व्यक्तित्व को पैदा कर दिया जो दूसरे मनुष्यों के मुकाबले में बहुत ही विलक्षण था, बिलकुल भिन्न था उनमें सत्य प्रेम के भाव का सभी पहलुओं में विकास हुआ इन सब भावों के मिलने से एक ऐसा जीवन पैदा हो गया जो इन चारों जगतों के ऊपर एक पाचवें जगत का भगवान देवात्मा के रूप में आगाज हुआ। भगवान में जन्मजात शुभ अनुराग के भावों के विकसित होने से उन्होंने दूसरों की भलाई के लिये अपने आप को लगा दिया। उस भलाई के काम में अपने आप को झोंक दिया। इस भाव से परिचालित

होकर भगवान ने अपनी नौकरी को छोड़ कर मनुष्य जाति की भलाई करने के लिये 32 वर्ष की उमर में जीवन व्रत ग्रहण किया कि "सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार ही में जीवन यह जावे"। आदरणिय सभापति जी ने आगे विस्तार में इसके बारे में वर्णन किया कि भगवान को लोगो ने कैसे 2 उत्पीड़ित किया। माता पूजनीय जी ने उनका पूरा साथ दिया।

सभापति जी ने आगे फरमाया कि जो मनुष्य अपनी नीचता वा हीनता स्वीकार करता है। और उसके परिशोध में कुछ करता है, उसका आगे विकास होना लाजमी है। सभापति जी ने हृदय के भावों से भर कर कहा कि उनका हृदय उन सब के आगे आदर से झुक जाता है जो भगवान देवात्मा की शिक्षा का अनुसरण करके अपने को उच्च बनाते हैं। अपनी नीचताओं से छुटकारा पाते हैं। और भगवान की शिक्षा को आगे फैलाते हैं। इस पहलू में उन्होने आगे डा॰ राकेश कुमार सतश्री के बारे में कहा जिन्होंने भगवान के देव दर्शन पर पुस्तक लिखी है और देव धर्म को फैलाने में इतना परिश्रम किया। और दिल्ली से यहां आकर अपने भावों का प्रकाश करने पर उनका धन्यवाद किया और उनके द्वारा Museum का उदघाटन किया गया इसके बाद सभापति जी ने जन धन की अपील की। धर्म सम्बन्धियों से दान प्राप्त हुआ, लोगों ने सत्संगों में भाग लेने का प्रण किया आदि आदि, इसके बाद सभा समाप्त हुई।

14.12.2016 बच्चों की सभा और भजनों का गान। 1.45 बजे बच्चों की सभा को श्रीमती सुरजीत बराड़, डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों और रूपन्द्रि जी ने conduct किया। बच्चों ने भजन और जीवन कथाएं सुनाई। उन भोले भाले बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए हाजरीन खुब तालियां बजाती रही।

इसके बाद खेड़ा साहिब की एकैडमी के बच्चों की एक बड़ी टीम ने बेहद तैयारी के साथ 4 – 5 भजनों का गान किया। सारे भजन बहुत ही सुन्दर सुर ताल में गाए गए। एक बच्ची ने "सुरक्षित हूं मैं हे भगवन, तुम्हारी शरण में आकर" नामक भजन गाया जो दिलों की तारों को झंझोड़ रहा था। यह सारा प्रोग्राम बहुत ही प्रशंसनिय था। इसमें बच्चों ने वा प्रबन्धकों ने बहुत संग्राम किया। खेड़ा साहिब साज, वालों, तैयारी कराने वालों पर प्रति वर्ष बहुत खर्च करते हैं।

14.12.2016, शाम 4 बजे लैक्चर

वक्ता : श्री विनोद चन्द्र जी खेड़ा
सभापति : डाक्टर जैरथ साहिब
विषय: सुखों के भँवर में मनुष्य दुखी क्यों है?

श्रीमान डॉकटर विनोद खेड़ा ने उपरोक्त बहुत गंभीर विषय पर एक सरल भाषा में समझाने वाला भाषण प्रस्तुत किया जिसे उपस्थित जाने माने सैंकड़ों श्रोताओं ने बहुत लाभदायक और रोचक अनुभव किया। डॉक्टर खेड़ा ने "सुख" के शब्द की परिभाषा करने के साथ अपना भाषण आरंभ किया और बहुत स्पष्ट तरीके से समझाया कि मनुष्य किस प्रकार सुखों की दौड़ में हर समय अपनी मनमर्जी पूरी करने के चक्कर में रहता है। इस प्रकार वह न केवल स्वयं के लिए अपितु भौतिक

पदार्थों, पेड़ पौधों, पशु जगत के जीव जंतुओं और अपने साथी मनुष्यों के लिए हानिकारक और दुखदाई बन रहा है।

डॉक्टर खेड़ा ने गुरु नानक की वाणी "नानक दुखिया सब संसार" का वर्णन करके श्रोतागणों से पूछा की क्या हम दुखों का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हैं या हम कोई सच्चा और सही रास्ता खोज सकते हैं, जिसमें हमे सच्चे सुख की प्राप्ति हो सके।

ऐसा रास्ता खोजने से पहले हमें यह जानना जरूरी है कि "जिसके लिए सच्चे सुख का रास्ता खोजा जा रहा है वह है कौन"?

डॉक्टर खेड़ा ने श्रोतागणों में से एक व्यक्ति से पूछा कि आप कौन हैं। इसके उत्तर में उन द्वारा अपना नाम बताए जाने पर, खेड़ा साहिब ने कहा कि अक्सर व्यक्ति अपने नाम को ही अपना अस्तित्व मानते हैं, जबकि उनका असली अस्तित्व उनकी जीवनी शक्ति अथवा आत्मा है जो उनके शरीर का निर्माण करने वाली, उसे जिंदा रखने वाली, तथा उसे एक से अनेक बनाने की क्षमता रखने वाली वस्तु है जिसकी ओर से मनुष्य पूर्णतय: अनभिज्ञ है। इस आत्मा या जीवनी शक्ति के बिना मृत मनुष्य के सुंदर से सुंदर शरीर तथा बढ़िया से बढ़िया दिमाग को या तो फूँक देते हैं या दफना दिया जाता है। यह सच्चाई परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने पहली बार इस विश्व में खोजी है।

आजकल ब्लैक मनी की बहुत चर्चा है। डॉक्टर विनोद खेड़ा ने पूछा कि यह समस्या कहाँ से आ टपकी जबकि हज़ारों साल पहले मनुष्य ऐसी अनेक समस्याओं से स्वतंत्र होकर अपना जीवन सुख से व्यतीत कर रहा था। डॉक्टर खेड़ा ने बताया कि इस और अनेक समस्याओं का कारण मनुष्य के एक या दूसरे सुखों की गुलामी है जिसे देव धर्म की परिभाषा में नीच सुख अनुराग कहते हैं। हम पशुओं से विकसित होकर इस पृथ्वी पर आए हैं। पशु आज भी चैन की नींद सोता हैं परन्तु हाय! मनुष्य को वह चैन की नींद भी उपलब्ध नहीं।

डॉक्टर खेड़ा ने बताया कि मनुष्य धन संपति का, आलस्य का, स्वाद का, नशों का, विषय वासनाओं का, अंह और मनमर्जी इत्यादि का गुलाम होकर स्वंय भी सुखी नहीं रह सकता और अपने इर्द गिर्द के वजूदों को भी सुखी नहीं रहने दे सकता। मनुष्य ने विकास के नियम के अनुसार बहुत सी आश्चर्यजनक उपलब्धियां तो प्राप्त कर ली हैं, परन्तु अपने असल अस्तित्व अर्थात आत्मा के ज्ञान से अज्ञानी होने के कारण सुखों के भँवर में फँसकर महादुख भोग रहा है।

एक कल्पित कहानी के माध्यम से श्रीमान डॉक्टर खेड़ा ने मनुष्य की इस अवस्था पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार एक व्यक्ति जिसके पीछे हाथी लगे हुए थे खुद की जान बचाने के लिए भागकर एक पेड़ पर चढ़ गया जिसके ऊपर एक शहद कि मक्खियों का छत्ता लगा हुआ था। हाथियों ने अपनी सूंड से उस पेड़ को घेरकर ज़ोर से हिलाना शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप शहद की मक्खियाँ उस व्यक्ति को काटने लगीं, साथ साथ छते से शहद भी टपक रहा था जिसका वह व्यक्ति खूब मज़े से स्वाद ले रहा था उसे मुधमक्खियों के

काटने की को परवाह न थी। पास से एक वाहन में कुछ सज्जन पुरुष जा रहे थे जिन्होंने उसकी इस दुर्दशा को देखा और उसे बचाकर अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव रखा पर उसे तो शहद से टपकती बूंदों का सुख इतना गुलाम बनाए हुए था कि उसने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया और मधुमक्खियों का शिकार बनना मंजूर किया। एक एक बुराई ग्रस्त मनुष्य जीवन की ऐसी ही गाथा है।

डॉक्टर खेड़ा ने श्रोतागणों को बताया कि हर प्रकार के अनुचित दुखों से बचने के लिए और हर प्रकार के उचित सुख प्राप्त करने के लिए एक ऐसे अद्धितीय अस्तित्व का आविर्भाव हो चुका है जिन्हें हम सम्मान भाव से भगवान देवात्मा कहते हैं और देव धर्म के संस्थापक हैं, जिन्होंने हज़ारों मनुष्यों को गहरे और भीषण दुखों से मोक्ष दी है और उनके जीवन में वह असाधारण खुशियाँ और सुख लाने का काम किया है जो आज के युग में एक अनोखा दृष्टांत है।

डॉक्टर खेड़ा ने दो जीवंत उदाहरणों द्वारा यह प्रमाणित किया कि किस प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मनुष्य जगत में आध्यात्मिक क्रान्ति लाकर मनुष्यों को अनुचित दुखों से मोक्ष देकर उचित सुखों का भागी बना रहे हैं। श्रीमान चमन लाल जी जो नेपाल से हैं ने अपने छोटे से ब्यान में बताया कि कि किस प्रकार डॉक्टर खेड़ा जी की परलोकवासी माता जी ने उन तक भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचा कर उन्हें महा पापों से भरे जीवन से निकालने और भगवान के चरणों से जुड़कर सुख शांति का जीवन व्यतीत करने का अनोखा अवसर प्रदान कर दिया है। पहले वह रात के समय पेड़ों पर सो रहे पक्षियों को पेड़ हिलाकर गिराकर पकड़कर कच्चा चबा जाते थे और शराब, मांस अंडे खाने इत्यादि के व्यसनों मे बुरी तरह ग्रस्त थे, कहाँ वह आज अपने साथी नेपालियों से ऐसे पाप छुड़वाने का काम कर रहे हैं। इसके उपरांत श्रीमान जगदीश प्रशाद जी कुक्कड़ ने भगवान के चरणों में आने से पहले ही अपने महा भयानक पाप ग्रस्त अवस्था का दुख भरे दिल से वर्णन किया कि किस प्रकार वह बचपन से ही लगभग सारे ही पापों में फँस गए थे और जवानी तक किस भयंकर दुर्दशा को प्राप्त हो चुके थे और परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म महोत्सव की भाव प्रकाश की एक ही सभा ने उनके जीवन में सुखों की भरमार करके एक अनोखा अध्याय आरंभ कर दिया।

अंत में सभा के सभापति डॉक्टर जैरथ ने डॉक्टर खेड़ा के द्वारा इतने गंभीर विषय को बड़े सरल ढंग के साथ श्रोतागणों के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए विशेष योग्यता के साथ दिये गए इस भाषण की बहुत भावपूर्ण शब्दों में प्रशंसा की।

विशेष सत्संग

संगरूर – 27, 28, 29 जनवरी 2017 शुक्रवार, शनिवार और ईतवार।
कल्याण – 17, 18, 19, 20 फरवरी 2017 शुक्रवार, शनिवार, ईतवार और सोमवार।

भाव प्रकाश

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी

श्रीमान सुखदेव जी इंगलैंड :– मैं श्रीमान जगदीष जी की 18 वर्षों से सेवाओं को देख देखकर दंग रह जाता हूं, विशेषकर महोत्सव के समय। इनके लिए बहुत सन्मान पैदा होता है। हमारे वा हमारे अबोधी सम्बन्धियों की ओर से उनका अपमान या निरादर हुआ है, उसके लिए दिल की तह से क्षमा चाहता हूं। गुरू मिशन से जो पाया है, उसका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता। गुरू महाराज ने फरमाया है कि जो आदमी मेरे साथ कुछ भी जुड़ा है, उसका पहले से कुछ न कुछ भला होना ज़रूरी है। और जो मुझसे दूर हो जाता है, उसका नुकसान होना आवश्यक है। हमारे आत्मा की सच्ची खुराक केवल और केवल देवात्मा के साथ जुडने में है।

यदि मैं कोई राजा भी होता तो, जो खुशी मैं गुरू मिशन से जुड़कर आज महसूस करता हूं, मैं कभी भी महसूस नहीं कर सकता था। भगवान देवात्मा का आपार ऋणी हूं। गुरू महाराज ने फरमाया है कि "देवराज आएगा, मुझको यक़ीन है" उन्होंने देवराज की नींव स्थापन कर दी है। समय के साथ इस कारज का फैलना आवश्यक है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा को अपना मकान किराए पर देकर मिंटगुमरी में कच्चे कमरे में रहना पड़ा (भरे हुए दिल से) अपने आपको तिल तिल कुर्बान करना पड़ा। यहां की सभाएं एक से बढ़कर एक थी। जब मैं सोचता हूं कि यदि श्रीमान जी मेरे गांव में न जाते तो मैं कहां होता और क्या होता?

श्रीमान जगदीष प्रसाद जी:– जितना समय मैंने समाज में गुज़ारा है, उसमें से बहुत कम समय मैंने समाज को दिया है। नये बन रहे सांईस और भगवान देवात्मा के मयूज़ियम के लिए जो समय और काम की मेरे से मांग होगी, मैं खुशी खुशी करने के लिए तैयार हूं। मैं एक एक काम के प्रैशर के कारण सन्तुलन खो बैठता हूं और बौख़ला जाता हूं, मुझे महसूस हुआ है कि मुझे और सहनशील होना चाहिए। अपनी तरफ ध्यान गया है। गुरू महाराज की बड़ी कृपा है।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान (श्री अकबरपुर) जिस प्रकार रेत पर पड़ी हुई मछली को पानी में जाने से खुशी होती है, उसी प्रकार महोत्सव पर आकर और उसमें पूर्ण रूप से शामिल होकर महसूस हो रहा है। बहुत लाभ हुआ है। खाने का प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर और शानदार था। 3–4 बार खाना और चाय की व्यवस्था थी। यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था बहुत अच्छी थी।

जो सन 1966 में मुझे गुरू–महाराज की रोशनी मिली थी, अपना आप जिस प्रकार गन्दा, मैला नज़र आया था, उसके लिए जो शोक वा दुख और इस दर पर आकर गुरू महाराज के लिए जो श्रद्धा महसूस की थी, जो पाक खुशी से हृदय गद् गद् करता था, अब अनुभव हुआ है कि वह पाक खुशी फिर अनुभव नहीं हुई। इसका दुख हो रहा है। मैंने जो जो नीच गतियां की हैं, वह रोशनी फिर नहीं मिली। रोशनी को और पाने की आवश्यकता महसूस हुई है।

मेरा खेलों में भाग लेना, मैं समझता हूं गौण था, भगवान का कारज मुख्य था। जापान की लाईब्रेरियों में भगवान का लिट्रेचर पहुंचाया और सच्ची खुशी प्राप्त की। जापानी लोगों की सेवाओं का हृदयगत भाव से ब्यान किया।

श्री अकबरपुर के पवित्र स्थान पर जो सेवा का सौभाग्य प्राप्त है, उस अधिकार का श्रद्धापूर्ण ब्यान किया।

खेड़ा साहिब के लैकचर से बहुत लाभ हुआ। मैं पाकिस्तान यात्रा का प्रोग्राम बना रहा हूं, जिनके पास पासर्पोट हैं, और जाना चाहते हैं, वह जा सकते हैं। इस अजायब घर के लिए मैं पूजनीय भगवान द्वारा हस्त लिखित देव शास्त्र और एक प्रति "जीवन तत्त" की सलाना फाईल भेंट करूंगा। उपकारी श्रीमान जी ने जो मेरी हित के लिए लिखने के साधन बताए हैं, वह अवश्य करूंगा और लाभ उठाऊंगा।

श्री रजिन्द्र जी मैं आप सबको नमस्कार करता हूं। इस दर से जुड़ गया हूं। कभी इस दर से दूर नहीं जाऊंगा। श्रीमान जी मेरा फिकर करते रहते हैं। मैं समाज से परे जाकर, हानि उठाऊंगा। श्रीमान जी को दुखी होने का मौका नहीं दूंगा। हम सबको ही इस दर से जुडे रहने की ज़रूरत है।

श्री एस०एम० मदान साहिब चण्डीगढ़ (डारैक्टर रिटायरड हरियाणा इंजनीयरिंग)। मैं पहली बार इस महोत्सव पर आया हूं। इस सारे प्रबन्ध को देखकर वा प्रबन्ध करने वालों को देखकर मैं चकित रह गया। गुरू महाराज का ही प्रताप इस सब सेवा के पीछे नज़र आया है। इन दिनों में परम श्रद्धेय, परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी के जो अति उत्साहित करने वाले उनके देव प्रभावों का दान मिला है, अपनी नीच गतियां नज़र आई हैं। उनसे निकलने की प्रबल इच्छा हुई है। उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए विशेष प्रेरणाएं महसूस हुई हैं।

श्री खेड़ा साहिब के लैक्चर में जो खास बात साफ हुई है कि मनुष्य की सुख लालसाएं ही मनुष्य को चलाती हैं। दिमाग और जिस्म तो उनके हाथों Tool हैं। आत्मा के उच्च वा नीच जीवन का शरीर पर भी असर पड़ता है, परिवार पर भी असर पड़ता है। सत्संग में नहीं आऐंगे तो नुकसान तो होगा ही होगा। मैं सभापति जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और अन्य वक्ताओं का धन्यवाद करता हूं। मेरा विश्वास है कि कुछ न कुछ भला अवश्य हुआ है और आगे होगा।

श्रीमान जगीर सिंह जी (केसूपुरा, सरसा) श्रीमान खेड़ा साहिब जी की सभा, बच्चों की सभा और भजनों द्वारा मुझे बहुत लाभ हुआ है। मैं कई साथियों की उदासीनता देखकर निराशा से भर गया था। कई विवाह, शादियों में भी घिरा हुआ था। यहां आकर महसूस हो रहा है कि कोई आए या न आए, मैंने किसी की ओर नहीं देखना, मुझे यहां वा और समागमों में पहुँचना ज़रूरी है। मैं हमेशा सब सभाओं में शामिल हूंगा। गुरू महाराज के कारज में अपने ही भले के लिए सेवाकारी हूंगा। यहां आकर सच्चा बल मिलता है। नई जान आती है। जितना जुडूगा, उतना मेरे बच्चों का भी भला होगा। श्रीमान जी का त्याग देखकर हृदय उनके प्रति झुकता है।

श्रीमान झंडा सिंह जी (करनाल) :- श्रीमान जी की देख रेख वा सेवा करने की प्रेरणा पैदा हुई है। (वह बहुत सेवाकारी होते रहे) महोत्सव पर आकर अपने आपको बहुत नीच और तुच्छ महसूस करता हूं। महोत्सव सम्बन्धी तैयारियों में पहले आकर सेवाकारी नहीं हुआ। इस बात के लिए शर्म आ रही है। बहुत फटकार पड़ती रही। अपने मुंह पर थप्पड़-मारने को दिल करता था। सत्संग में न आने के बहाने बना देता हूं। उच्च साधन करने और अपना भला करने का पूरा संग्राम करूंगा। यहां आने से ही मेरा जीवन बच सकता है। असली संग्राम करने की बहुत आवश्यकता है। दूसरों को भी इस सत्संग में लाने का अवश्य संग्राम

करूंगा।

श्रीमान अनिल कुमार जी (पदमपुर):- पहली सभा छोड़कर बाकी सारी सभाएं सुनी। यहां आकर अपने अस्तित्व विशेष रूप से अपने आत्मा का भला करने के विचार आते हैं। यह विचार यहीं पैदा हो सकते हैं और स्थिर रह सकते हैं।

श्री मधू सूदन जी (योगा टीचर) दड़बा चण्डीगढ़ :-साथी और धर्म सम्बन्धी मेरी सेहत का हाल पूछ रहे हैं (वह काफी महीनों से डिप्रैशन में से गुज़र रहे हैं)। मैं तो पागल हो चुका हूं। मैं बैल हांकने वाला, बकरियां चराने वाला तुच्छ जन यहां आकर देख चुका हूं कि यहां भला होता है। जैसे अम्बाला के नेचर-क्योर ने मुझ मरते हुए को नया जीवन दिया था, उसी प्रकार मेरा यहां भला हुआ है। कुछ समय से मैं अपने घमंड और नीच घृणा के हमलों से परास्त हुआ पड़ा हूं। इनसे लड़ने का यत्न करता हूं, परन्तु परास्त हो जाता हूं। मेरे भीतर "मैं" भरी पड़ी है। इस दर से दूर होकर मेरे भीतर तबाही आ जाती है। मेरा अंहकार बुरी तरह बर्बाद करता है। इस स्थान से जुड़कर ही बचता हूं। दूरी से अपना नाश करता हूं। श्रीमान जगदीष जी की तैयार की दवाई, जो श्रीमान जी ने भेजी, उससे लाभ हुआ है। उसी कारण आज मैं यहां आ सका हूं।

श्रीमान जलधर जी (दड़बा चण्डीगढ़) मेरा बहुत भला हुआ है, जिन्होंने इस समाज से मुझे जोड़ा है, उनकी कृपा बताई नहीं जा सकती। एक मजदूर को कहां का कहां पहुँचा दिया। डा० शशी बहन जी किताबों का फिकर करते करते परलोक चले गए। मैं इस सेवा के लिए हाज़िर हूं। मैं लोगों की सेवा करने की कोशिश करता हूं। नशे छुड़ाने का यत्न करता हूं, इस से कुछ भला होता है।

सेठ सुरिन्द्र कुमार जी पदमपुर के सपुत्र मैं इस स्थान पर सभाएं सुनने के लिए नहीं आया था। मैं अपने पिता की देख रेख ओर सहायता के लिए आया था। मैंने यहां आकर महसूस किया है, कि आगे से पिता जी सत्संग में आएं या न आएं, मैं यहां जरूर आऊंगा। मेरे भीतर नौजवानों तक पहुँचकर उनकी सेवा करने के भाव पैदा हुए हैं।

सेठ सुरिन्दर कुमार जी (पदमपुर) मैं अपने आपको बहुत अभागा महसूस करता हूं कि मैं इतने वर्षों से सत्संग में आता हूं। सब पापों से बचा हुआ हूं, फिर भी सेवक नहीं बना। मैं आगे से पूरी कोशिश करूंगा कि सेवक बन जाऊं।

श्रीमान वैनक्टेशवर जी (लुधियाना) विकास क्रम में देवात्मा का ज़हूर और उनके महानतम कारज का ब्यान नहीं हो सकता। मैं ओशो के चक्र में पड़कर आत्मिक मौत कर रहा था। श्रीमान जगजीत सिंह जी के निमन्त्रण कारण मेरा बहुत भला हो गया। गुरू महाराज की छवि को प्रणाम करते करते उनके अजाबों को सामने लाकर तड़प उठता हूं। श्रीमान जी ने मुझे भजन गाने और भगवान को स्मरण करने में लगाया था उससे बहुत भला हुआ है। मेरे भीतर विनाशकारी शक्तियों की भरमार है। मुझे विकासकारी शक्तियों ने बचाया हुआ है। अपने आत्मा का फिकर हो रहा है। (वह हर सभा से बहुत प्रभावित होते रहे। गांव में विकासकारी शक्तियों की सहायता से वृद्ध आश्रम खोला है। गऊशाला खुलवाने की कोशिश करूंगा।

सुभाष जी पंचकूला :- श्रीमान जी हमारा बहुत ख्याल रखते है सत्संग में आने की प्रेरणा करते रहते है इस बार मोहत्सव की सारी सभाएं सुनी बहुत लाभ महसूस हो रहा है। गुरू महाराज जी की कृपा से

हमारे घर परिवार में बहुत प्यार मेल का वातावरण है यह सब गुरू जी की दी हुई रोशनी का कारण है। माता पिता के उपकार सामने आते रहते है। उन्हें रोज याद करके प्रणाम करता हूं। शुभ कामना करता हूं। हम जो कुछ भी है उनकी बदौलत हैं। उन्होंने ने हमें गुरू महाराज के साथ जोड़ा बहुत बड़ी कृपा की। उन्होंने लगभग सारी उमर यहाँ से शिक्षा पाई और समाज में ही काम किया। लाहौर फिरोजपुर, मोगा, फिर रामपुराफूल में स्कूल बनाया सब गुरू की कृपा से करते रहे अकसर सभाओं में कहते थे कि मैंने तुम्हें ज्यादा दुनियावी सुख नही दिये पर गुरु का दर जो दिया है यह सब से बढ़कर है, कभी दूर न होना। हमें समाज जन्म से मिली है। अगर न मिलती तो पता नहीं क्या हाल होता। कर्मचारीयों के उपकार याद आते हैं। श्रीमान बखशी जी ने मुझे दवाई दे कर बचा लिया। श्रीमान धर्म बल जी, श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमान धर्म वीर जी, श्रीमान गुरवन्त जी, श्रीमान प्रेमबल खेड़ा जी, श्रीमान लाला राम जी दास जी, श्री जुल्ली राम जी, श्री जानकी दास जी, श्री मेवा सिंह जी सब हमें बहुत प्यार करते थे। श्रीमती सुशीला देवी जी, श्रीमती देवकी देवी जी, भी बहुत प्यार करती थी उन सब के चरणों में झुक कर आशीर्वाद लेता रहता हूं। यह सब गुरू की शिक्षा का प्रभाव है।

मैं महोत्सव पर आये साथी सेवको से प्रार्थना करता हूं अपने बच्चों को सभाओं में लाएं गुरू की शिक्षा से जोड़ें इसी में उनका लाभ है बरकतों से मालामाल हो जावेंगे। मै सब प्रबन्ध कर्ताओं को धन्यवाद देता हूं इतनी अच्छी सभाएं की, सारा प्रबन्ध किया।

समय बहुत हो चुका था, सभापति जी ने इस महान पर्व को समाप्त करने से पहले गुरू महाराज और सहायकारी शक्तियों का विनीत भावों से भरकर धन्यवाद किया। प्रबन्ध करने, भजन गाने, सभाऐं कराने, खाना बनाने, खिलाने, दान देने, पुस्तकें बेचने, इस सबके लिए एक एक जन का धन्यवाद किया।

आखिर में सब हाजरीन का धन्यवाद किया और जोश से भरकर सबने मिलकर देव आरती का गान किया और फिर चार बार जय ध्वनि के साथ यह पावन पर्व समाप्त हुआ इस सब सफलता के लिए गुरूमहाराज को जितना धन्यवाद दे सकें कम है।

(एक सेवक)

शुभ विवाह

16 दिसम्बर 2016 को दुपहिर के बाद 2 बजे श्रीमान सुखदेव सिंह जी केसूपुर (सिरसा) पुत्र श्री गुरनाम सिंह जी का शुभ विवाह बीबी डा० रमन प्रीत कौर M.A. Ph.D Eng. पुत्री सरदार भगत सिंह जी निवासी नंगल (पंजाब) के साथ देव समाज अनुष्ठान विधि द्वारा देव आश्रम (देवी नगर) डेराबस्सी में किया गया। यह अनुष्ठान श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान साबक कौंसलर देव समाज ने कराया। वर और कन्या दोनों की माताओं के भिन्न और सम्बन्धी स्नेही भी शामिल हुए। सब ने विवाह का आशीर्वाद वा मुबारकें दी।

-मन्त्री

मैं अपने सौभाग्य को अनुभव करती हूं

आजकल माता पिता संतान यज्ञ के दिनों में विशेषरूप से माता पिता की याद ताजा हो जाती है। माता पिता के उपकारों का बदला तो कोई भी चुका नहीं सकता, परन्तु मैं यह गहराई से अनुभव करती हूं, कि जिन बच्चों के माता पिता में जितने अधिक सद्गुण होते हैं, उच्च शारीरिक, मानसिक, वा हार्दिक योग्यताएं होती हैं, उनको अपने बड़े बजुरगों से उच्च गुणों से भरपूर पूंजी मिलती है, उनकी संतान होना बहुत ही सौभाग्य की चीज़ है और उनके उपकारों का बदला चुकाया जाना और भी असम्भव है।

मैं सचमुच अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखती, जब मैं यह याद करती हूं कि मैं किस माता पिता की संतान हूं। पहले मैं अपनी माता को देखती हूं, जो एक सुन्दर शख्सीयत की मालिक थीं और एक ओर अनगिनत गुण मुझे उनके आगे झुकाते हैं, दूसरा उनकी संतान कहलाना मुझे गर्व से भर देता है।

मेरी माता जी तीन चाचा, ताया व अपने पिता की संतान थीं। उनके एक 10 वर्ष बड़ी बहन थी। दोनों बहनों ने विशेष गुण अपने बजुरगों से पाए। उनके पिता वा ताया चाचा विशेष रूप से उच्च कोटि की मान्सिक योग्यताएं रखते थे और गांव में लोग उनकी बुद्धि और बलिष्टता के आगे नतमस्तक होते थे और उनका कई गांवों में विशेष सम्मान था। मेरी माता जी को उनसे अथाह प्यार मिला, जो प्यार उन्होंने सारी उम्र अपनी संतान, उनके बच्चों और अन्य सम्बन्धियों में दिल खोलकर बांटा। उनका हमें इस उम्र में गोदी में लिटाकर सिर पर हाथ रख रखकर पलोसना याद आता है, तो अश्रुधारा बहने लगती है। हमें तो क्या उनके अधीन काम करने वालों, घर में सहायक जनों को भी उनका प्यार वा हमदर्दी नहीं भूलती। उनके प्रत्येक दुख सुख को सुनना और उसके दूर करने का यत्न करना उनके स्वभाव में था। आर्थिक रूप से कमज़ोर सम्बन्धियों की सहायता के उपाय सोचते रहना और हम सब बहन भाईयों को भी उनकी सहायता के लिए प्रेरित करते रहना। उनमें हमदर्दी का भी अत्यंत कीमती भाव था, जिससे वह दूसरों के दुख को भांप लेती थीं और इतना हौंसला देतीं कि निराशावान जन को आशावादी बना देतीं।

मेरे माता जी के भीतर चीज़ों का कोई मोह नहीं था बच्चों का मोह अवश्य था। अपने पास न कभी उन्होंने पैसा रखा और न कभी जेवरात। अच्छे कपड़े पहनने का शौक था, परन्तु जब ज्यादा हो जाते और कभी मैं उन्हें कह देती कि बेजी कुछ और कपड़े निकाल दो, तो फौरन कहती कि जो तुम्हें ठीक लगे किसी को दे दो। कई बार कीमती सूट भी जो एक बार पहने होते और लगता कि मैंने अब इनको कम ही पहनना है तो दे देती। बिना सिले सूट भी जब मिल जाते किसी उपहार में तो आते ही सोच लेती कि यह तो मैं फलां को दे दूंगी। किसी चीज़ का भण्डार उन्होंने अपने पास इकट्ठा नहीं किया।

मेरे माता जी में अच्छा खाना बनाने और फिर अधिक से अधिक लोगों को खिलाकर खुश करने का भाव था। सिलाई कढ़ाई बहुत छोटी उम्र में कर लेती थी और जब हम छोटी थी तो हमें कढ़ाई वाले बहुत सुन्दर फ्राक खुद बना बनाकर पहनाती और इसलिए हम सब बच्चों की कपड़े आदि के विचार से अलग पहचान होती

थी।

माताजी हम सब बच्चों, पिताजी, अपनी बहुओं के बिमार हो जाने पर निस्सार हो जाती थी और तीक्ष्ण बुद्धि से उसका कारण ढूंढ़ लेती और अपने बहुत कीमती और उपयोगी सुझाव देती। एक बार मैंने फोन किया कि बेजी मेरा पेट खराब हो गया है और मैं स्कूल से घर वापिस आ गई हूं। मैं प्रिंसीपल थी, परन्तु उन्होंने मुझे फौरन कहा कि बेटा कुछ न कुछ पीते रहना, पानी न खत्म हो जाए अभी उनके कहे थोड़ा ही समय हुआ था कि सचमुच ही मुझे **Dehyderation** हो गई मेरी जुबान सूख गई, बोलना बंद हो गया और खुशकिस्मती से बेटा घर में था, **Medical student** था उसने फौरन **Glucose** आदि का प्रबंध किया और मैं बच गई।

मेरे माता जी ने मेरे पिता जी का हर दुख सुख में बहुत बहादुरी से साथ दिया है। एक ओर वह अंधेरे से भी डरने वाली, दूसरी ओर यू. पी. के जंगलों में पूरी पूरी रात शेरों के, सांप के होते हुए मजदूरों से काम करवाने का साहस। क्या गजब का व्यक्तित्व था।

देव समाज में आकर उनकी योग्यताएं और निखरी। उन्होंने विकासालय का इम्तिहान पास किया। सुन सुन कर याद किया और मैं छटी सातवीं में पढ़ती थी, जब उनके बोलने पर मैंने पेपर लिखे। उन दिनों उन्होंने एक लेख लिखाया था, "शरण तुम्हारी न आती मैं, तो क्या होती कहां होती।" वह पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आकर जो लाभ मिले थे, उनको साफ साफ देखती थीं।

मेरे माता जी की मान्सिक शक्तियां बहुत गज़ब की थी। हम बच्चों को जिन जिन को उनका अधिक अंश मिला है, वह कुछ का कुछ बन गए हैं, और बन रहे हैं। बेशक वह स्वयं पढ़ी लिखी नहीं थीं, परन्तु पढ़ाई की उन्हें बेहद कदर थी। विशेष रूप से अपनी बेटियों को वह अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती थीं। इसके लिए उन्हें बड़ी विरोधता का सामना करना पड़ा। पिता जी की बिमारी और यू. पी की ज़मीन से घाटे पड़े तो कई हमदर्द लोगों की यही सलाह थी कि लड़कियों की पढ़ाई बंद कर दो और यह जवान हो रही हैं, तो उनकी विरोधता का सामना किया और साफ ऐलान कर दिया कि मैं अपनी बेटियों को पढ़ाऊंगी चाहे उसके लिए मेरा कुछ भी बिक जाए। मैं नहीं चाहती कि जो मुसीबत आज मुझ पर आई है, वह कल बच्चियों पर आए और वह बेसहारा रहें। उन्होंने यह ऐलान ही नहीं किया बल्कि हम चारों बहनों में से तीन एम. ए., बी. एड. हुई और छोटी ने पी. एच. डी. तक शिक्षा पाई। सब प्रिंसीपल के पद तक पहुंचीं। हमारी उपलब्धियां सब उनकी दी हुई योग्यताओं के कारण हैं।

मेरे माता जी के भीतर प्रबंध की बहुत योग्यता थी। उनकी सब योग्यताओं को स्मरण करे, तो उनके आगे दिल झुक जाता है। और अपने सौभाग्य की कोई सीमा दिखाई नहीं देती कि मैं उस माता की संतान हूं उन्होंने मुझे पालने, बिमारियों में बहुत बुद्धिमानी से मेरी रक्षा करने, मुझे शिक्षा देने, मुझ पर इन्तहा भरोसा करने, प्यार का अमूल्य खजाना लुटाने, मुझे खिलाने पिलाने, मेरे बच्चों को प्यार देने, मुझे अच्छी शिक्षा देने के अमूल्य उपकार किए हैं, उनके लिए मैं उनकी इतनी आभारी हूं कि चाहकर भी उसका बदला नहीं चुका सकती। आप जिस प्रकार हमारे आने का इंतजार करती थीं और चाहे हम कितने आपके पास रहें, तो भी आपका दिल नहीं भरता था और हमेशा आते हुए पूछती अब कब आओगी। आपकी अवर्तमानता बहुत बड़ा घाटा है, परन्तु नेचर के नियमों को टाला नहीं जा सकता। उनकी याद आज भी साथ है और परलोक से सदा

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

उनका आशीर्वाद मिलता रहेगा। मुझे खुशी है कि मैंने अपनी माता से कभी मोटे तौर पर गल्त व्यवहार नहीं किया। सदा ही उनके विश्वास की पात्र रही, यह मेरा सौभाग्य है।

मेरे पिता जी भी एक आकर्षणीय व्यक्तित्व के मालिक थे। वह अपने भीतर श्रद्धा, कृतज्ञता देवात्मा के मिशन के लिए फनाह होने का ज़ज्बा रखते थे बेशक कई बार गल्त रहनुमाई में उन्होंने हानि उठाई, परन्तु जब उन्हें पता लग जाता था तो साफगोई से उसको स्वीकार कर लेते थे। अपनी गल्ती के लिए क्षमा मांगना उनके लिए तनिक भी कठिन नहीं था। वह मोह से बहुत कुछ बचे हुए थे। उनकी अनथक मेहनत पूजनीय भगवान से सम्बन्धित भारत के हर स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। हमारे मेहरबानों ने उन्हें गुरु महाराज के बूढ़े जरनैल का पद बख्शा था, बेशक अन्त में उन लोगों की मेहरबानी से ही वह अत्यधिक सदमों में से गुजरे। परन्तु गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा कभी कम नहीं हुई। जो काम मन में ठान लेते थे, उसके लिए कमर कस लेते थे। फिरोजशाह का स्कूल विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान गोपीचन्द जी के बाद खत्म होने को था। परन्तु पिता जी के भीतर इतनी तड़प थी। एक दो महीनों में ही क्या उसकी बिल्डिंग बनाने, क्या नई अध्यापिकाएं रखने, क्या बच्चों को प्रेरित करके स्कूल की संख्या बढ़ाने में उन्होंने ऐसा काम किया कि देखने वालों को विश्वास नहीं होता था। अच्छे काम के लिए दूसरों को भी प्रेरित कर लेते थे। गुरु महाराज के साथ आत्माओं को जोड़ने की बेहद तड़प थी। किसी को पापों में फंसा देखकर उसको बचाने में जुट जाते थे।

उनका ऐसा सदगुणधारी रूप मेरे सौभाग्य का विषय है। उनके उपकार हैं कि जो उन्होंने हमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा से जोड़ दिया, हमारी भलाई का मार्ग खुल गया। हमारी पालना में उन्होंने जो संघर्ष किया, अपनी जान पर खेले हैं। उनके इन उपकारों का बदला दिया नहीं जा सकता। वह सदा दूसरों की सेवा करने के लिए प्रेरित करते थे। हमारी उपलब्धियों पर फख़्र से भर जाते थे। उनसे मिली अध्यात्मिक पूंजी, मेरी कीमती विरासत है। मैं, तुच्छ ऐसे दान के दाता माता पिता को शत शत प्रणाम करती हूं और उनसे सदा आशीर्वाद की भिक्षा मांगती हूं और उनको कभी भी दुख पहुंचाया हो, उसके लिए क्षमा मांगती हूं, उनके उपकारों से रोम रोम उपकृत हूं।

आपकी प्यारी बेटी

सुरजीत

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts